आगे आपण विहिला थया, तो श्री देवचन्दजीए वंचया।
नहीं तो केम वंचे आपणने एह, जो राख्यो होत कांई आपणे सनेह।। ६६ ।।

आगे भी हम धनी से विमुख हुए, तो श्री देवचन्द्रजी हमें छोड़ गए। यदि हमने उनसे स्नेह किया होता तो वह हमें कैसे छोड़ते?

हवे वली आव्या बीजी देह धरी, आपण ऊपर दया अति करी।
चेतन करी दीधो अवसर, लई लाभ ने जागिए घर।। ६७ ।।

हमारे ऊपर दया करके दुबारा तन धारण करके आए हैं, तुम्हें मौका देकर सावधान किया है। अब लाभ लेकर अपने घर चलें।

मनोरथ सर्वे पूरण थाए, जो आ द्रष्टांत जुओ जीव मांहें।
ते माटे इंद्रावती कहे फरी फरी, जो धणिए कृपा तमने करी।। ६८ ।।

हमारे मनोरथ पूर्ण तब होंगे जब हम इस दृष्टान्त को जीव में विचार कर देखें। श्री इन्द्रावतीजी इसलिए बार-बार कहती हैं कि धनीजी ने हमारे ऊपर मेहर की है।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। ७४१ ।।

प्रगटवाणी प्रकासनी

सुईने सुई सूता सूं करो रे, आ विखम ठिकाणा मांहे जी।
जागीने जुओ उठी आप संभारी, एणी निद्राए लेवाणां कांय जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस कठिन ठिकाने (स्थान) में सोते-सोते क्या करोगे? जागो, देखो। उठकर अपने आपको संभालो। इस निद्रा में कुछ नहीं मिलने वाला।

एणी निद्राए जे कोई लेवाणा, नहीं ते आपणा साथी जी।
एणी रे भोमे घणां छेतरिया, तमे उठो इहां थकी जी।। २ ।।

इस माया में जिसने कुछ लिया है (माया की चाह की है) वह अपने साथी नहीं हैं। इस भूमि में बहुत लोग ठगे गए, इसलिए तुम यहां से उठो।

नहीं रे निद्रा कोई घेण धारण, निद्रा होय तो जगव्यो जागे जी।
उठाडी जीवने ऊभो कीजे, वली न मूके पोतानो माग जी।। ३ ।।

यह नींद नहीं है। यह तो कोई नशा है। नींद में हो तो जगा लें। उठाकर जीव को खड़ा कर लें और फिर अपना रास्ता न छोड़ें।

तेज गेहेन ने तेहज धारण, तेज घूटन अधको आवे जी।
एणी भोंमने ए निद्रा मांहेंथी, धणी विना कोण जगावे जी।। ४ ।।

यह वही नशा है। उसी नशे की नींद है। इससे जीव का दम घुटता है इस भूमि पर इस नींद से धनी बिना कौन जगाएगा?

एणे ठेकाणे तां कोई न उगरियो, तमे सूता तेणे ठाम जी।
ए ठाम घणूं विखम लागसे, प्रगट कहूं गत भोम जी।। ५ ।।

इस ठिकाने से कोई नहीं निकला। जिसमें तुम सोए पड़े हो, यह ठिकाना बहुत दुःखदाई लगेगा, इसलिए इस भूमि के गुण को बताती हूं।

Nijanand App

विखनी भोम अने विख पाथरियूं, आहार करे विख वेल जी।
सरीर विखनूं मांहेंली जोगवाई विखनी, एक मांहें ते जीव नेहे केवल जी।। ६ ।।

यह भूमि विष की है। सेज (शय्या) भी विष की है। आहार भी विष की बेल का है। शरीर भी विष का है और इसके अन्दर सारी सामग्री विष की है। केवल एक जीव है जो विष का नहीं है, वह विष से मुक्त है।

विखनी तलई ने विखना ओढना, विखनो ढोलियो ढलाए जी।
विखनो ओसीसो ने विखनो ओछाड, वली विजणे ते विखनो वाए जी।। ७ ।।

विष का गद्दा है। विष की रजाई है। विष का पलंग है और विष का बिछौना है। विष का तकिया है। विष की चादर है। विष के पंखे हैं। चल रही हवा विष की है।

जागतां विखने सुपने विख रे, निद्रामां विख निरवाण जी।
बाहेर तणो विख केही पेरे कहूं रे, तेतां वाए ते विख उधाण जी।। ८ ।।

जागने में विष, स्वप्न में विष और नींद में भी निश्चित रूप से विष है। बाहर के विष का वर्णन किस तरह से करूं? यहां तो विष की हवा उलटी चल रही है।

वस्तर विखने भूखण विख रे, सर्वा अंगे विख साज जी।
ए विख जीवने गेहेन घारण रे, ते केम टले विना श्रीराज जी।। ९ ।।

वस्त्र विष के हैं। भूषण विष के हैं। शरीर को सजाने की सब सामग्री विष की है। इस तरह के विष से जीव गहरे नशे में पड़ा है। यह बिना श्री राजजी की मेहर के हट नहीं सकता।

जोर करी तमे जगवो रे जीवने, नहीं सूतानी आ भोम जी।
जेमने सुइए तेम वाधे विस्तार, पछे नहीं उठाय केमे जी।। १० ।।

हे जीव! तुम जोर लगाकर जागो। यह सोने की जगह नहीं है। जितना सोओगे उतना विष का विस्तार बढ़ता जाएगा। बाद में किसी तरह से नहीं उठा जाएगा।

ए भोमलडी तमे कांय न मूको, हजी नथी घारण जाती जी।
एणी भोमे दुखडा दीसे घणा रे, ते तमे जुओ कां आघी जी।। ११ ।।

इस भूमि को तुम क्यों नहीं छोड़ते हो? अभी तक तुम्हारी नींद नहीं जाती। इस भूमि पर दुःख अधिक दिखाई पड़ते हैं, उन्हें तुम दूर रहकर क्यों नहीं देखते?

आघी जुए दुख अनेक उपजसे, ते माटे उठो तत्काल जी।
जल ना जीवनो घर जल मांहें, जेम रहे करोलियो मांहें जाल जी।। १२ ।।

दूर से देखने में भी अनेक दुःख उत्पन्न होंगे, इसलिए तुरन्त उठो। जल के जीव का घर जल में ही है, जैसे मकड़ी जाल में ही रहती है।

सहु कोई जाली गूंथे पोतानी, अने मांहेना मांहें मुझाय जी।
मुझाणा पछी दुख अनेक देखे, घणूं दुखे जीवड़ो जाय जी।। १३ ।।

सभी कोई अपना जाल स्वयं बुनते हैं और फिर उसी में फंस जाते हैं। फंसकर अन्दर ही अन्दर उलझ जाते हैं। उलझने के बाद अनेक दुःख होते हैं और फिर बड़े दुःख के साथ प्राण निकलते हैं।

Nijanand App

घणूं दुख देखे जीव जातां, वली ते गूंथे तत्काल जी।
केम दोष दीजे करोलियाने, एहेना घर थया मांहें जाल जी।। १४ ।।

जीव को जाते समय देखकर बड़ा दुःख होता है। वह जीव तुरन्त जाल बुनते हैं। इन्द्रावतीजी कहती हैं मकड़ी को दोष क्यों देते हो इसका तो घर ही जाल है।

आपणां घर तां नहीं एणे ठामे, चौद भवनमां क्यांहे जी।
ते माटे वालोजी करे रे पुकार, केहे स्या ने सूता छो आंहे जी।। १५ ।।

अपना घर चौदह भुवनों में कहीं नहीं है, इसीलिए वालाजी पुकार-पुकार कर कहते हैं कि तुम यहां क्यों सोते हो?

ओल्या दुखना घरतेपण मेले नहीं, तमे सुखना घर न संभार जी।
सघला ग्रन्थ पाए साख पुरावी, साथ हवे तो दोष तमारो जी।। १६ ।।

दुःख के जीव अपने घर को नहीं छोड़ते तो तुम अपने सुख के घर को क्यों याद नहीं करते? सब ग्रन्थों से तुम्हें गवाही दे दी है। हे सुन्दरसाथजी! अब दोष तुम्हारा है।

बेहद घर ने बेहद सुख रे, बेहद मारा श्री राज जी।
अविचल सुख अनन्त देवाने, हूं जगवुं तमारे काज जी।। १७ ।।

अपना घर बेहद के पार है और वहां सुख भी बेहद हैं। मेरे श्री राजजी महाराज की कृपा भी बेहद है, इसलिए तुमको अनगिनत अखण्ड सुख देने के लिए ही तुम्हारे लिए तुमको जगा रही हूं।

पिउजी पुकार करी करी थाक्या, तमे कांय न जागो मारा साथ जी।
ऊगीने दिन आथमवा आव्यो, अने पछेते पडसे आडी रात जी।। १८ ।।

पियाजी पुकार-पुकार के थक गए हैं। हे मेरे साथजी! तुम क्यों नहीं जागते। दिन उग करके संध्या हो गई। अब पीछे रात हो जाएगी।

रात पडी त्यारे कोई नव जागे, कोई न करे पुकार जी।
निसाए निद्रा जोर थासे, पछे वाधसे ते विख विस्तार जी।। १९ ।।

रात हो गई तो फिर कोई नहीं जागेगा। कोई पुकार कर जगाएगा भी नहीं। रात्रि में नींद बड़े जोर से आएगी, तब विष का विस्तार बड़ी तेजी से बढ़ जाएगा।

संझा लगे रह्या धणी आपण माटे, ते तमे कांय न संभारो जी।
ओलखी धणीने सुखडा लीजिए, तमें आपोपूं वारणे वारो जी।। २० ।।

अपने लिए धनी संध्या तक रहेंगे, तो तुम अपने को क्यों नहीं जगाते हो? धनी को पहचान कर सुख लो, अपने आपको कुर्बान कर दो।

पुकार करतां रात पडी रे, वालो रात न रहे निरधार जी।
जेणे रे तमने एवा भोलवया, ते वेरीडा कां न अविधारो जी।। २१ ।।

पुकार करते-करते रात हो जाएगी। फिर रात में प्रीतम निश्चय ही नहीं रहेंगे। जिसने तुम्हें इतना भुलाया है, उस दुश्मन की तुम पहचान क्यों नहीं करते हो? (यह सगे सम्बन्धी, अंग, इन्द्रिय)।

Nijanand App

आ भोम मूकतां जे आडी करे रे, घेर जातां जे कोई वारे जी।
ए वेरीडा तमारा प्रगट पाधरा, ते तां जुओने विचारी जी।। २२ ।।

इस भूमि को छोड़ने में जो रुकावट डाले तथा घर जाते कोई रोके तो वह भी तुम्हारा पक्का दुश्मन है। उसको तुम विचार करके देखो।

ए वेरीडा घणूं विख भरियां रे, जेणे खाधो ते सर्व संसार जी।
ते तमने भूलवे छे जुई भांते, पण तमे रखे लेवाओ आवार जी।। २३ ।।

यह सभी दुश्मन विष से भरे हुए हैं। इन्होंने सारे संसार को खा डाला है। तुमको भी वह अलग ही ढंग से भुला रहे हैं, किन्तु इस बार उनके चक्कर में नहीं आना।

वली तमने देखाडूं दुरजन, जेणे न मूक्यो कोय जी।
ते तमने प्रकासूं रे प्रगट, तारा माहेला गुण तूं जोय जी।। २४ ।।

अब तुमको दुष्ट की पहचान कराती हूं। इसने किसी को नहीं छोड़ा है। वह मैं तुमको प्रकट कर दिखलाती हूं। तुम अपने अन्दर के गुणों को देखो।

वली गुण इंद्री जुओ रे जातां, जे अवला वहे संसार जी।
ए वेरीडा विसेखे आपणां, ते तमे कांए न मारो जी।। २५ ।।

फिर अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को देखो जो उलटे संसार की तरफ जा रहे हैं (लगे हैं)। ये ही विशेषकर अपने दुश्मन हैं। इनको तुम क्यों नहीं मारते?

मारी ने मरडी भांजी करीने, वली जगवी करो तमे जोर जी।
गुण अंग इंद्री ज्यारे जीव जागसे, त्यारे करसे ते पाधरा दोर जी।। २६ ।।

इनको तोड़ मरोड़ कर फिर अपनी ताकत से जीव को जगाओ। जब जीव जाग जाएगा, तब गुण, अंग, इन्द्रिय सीधे रास्ते (राजजी के काम में) दौड़ने लगेंगे।

वासना जाणीनें कहूं छूं वचन रे, आ जल ना जीवने कोण कहे जी।
वचन सुणी जे होय वासना, ते आणी भोमे केम रहे जी।। २७ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आप परमधाम की वासना हो (आत्मा हो), इसलिए मैं तुमको कहती हूं, अन्यथा इन जल के जीवों (माया के जीवों) को कौन कहेगा? वचन भी वही सुनेगा जो वासना (आत्मा) होगी। जो वासना होगी, वह इस भूमि में कैसे रहेगी?

ए दुस्तर भोम घणूं रे दोहेली, वली ने वसेखे दुख रात जी।
ते माटे हूं करूं रे पुकार, मारो भली गयो मायामां साथ जी।। २८ ।।

यह कठिन भूमि बहुत दुःखदाई है। विशेषकर रात में दुःख बढ़ जाता है। इस वास्ते मैं पुकार-पुकार कर कह रही हूं कि मेरा सुन्दरसाथ माया में भूल गया है।

ततखिण रातडी आवी देखसो, मांहें प्रगट थासे अंधेर जी।
जीव अंधेर ज्यारे देखी मुझासे, त्यारे विखना ते आवसे फेर जी।। २९ ।।

शीघ्र ही रात्रि को आता देखोगे और तुम्हें अंधेरे का अनुभव होगा। जीव भी अंधेरे को देखकर उलझ जाएगा। जो विष नहीं आता था वह रात के आने से आ जाएगा।

Nijanand App

विख चढे फेर अनेक उपजसे, करम केरा जे दुख जी।
वली फरसे फेर अनेक काया, आखी रात चढसे फेर विख जी।। ३० ।।

विष चढ़ने पर किए हुए कर्म के अनेक दुःख होंगे, फिर अनेक तन धारण करने पड़ेंगे और पूरी रात विष का असर होगा।

मारो साथ होय ते तमे सांभलो, रखे आंही पाडो रात जी।
ए रातना दुख घणा रे दोहेला, पछे निद्रा उडसे प्रभात जी।। ३१ ।।

मेरे धाम के सुन्दरसाथ हो, तो सुनो। यहां रात्रि मत आने दो। इस रात के दुःख बहुत हैं, प्रभात होने पर ही नींद उड़ेगी।

प्रभात थासे अति वेगलो रे, रात छेडो केमे न आवे जी।
दुखनी रात घणूं जासे दोहेली, पछे वहाणू ते केमे न वाए जी।। ३२ ।।

सवेरा बहुत देर से आएगा। रात का अन्त आएगा ही नहीं। दुःख की रात बड़ी कठिनाई से बीतेगी। पीछे सवेरा किसी तरह से नहीं होगा।

महाप्रले काल ज्यारे थासे, तिहां लगे रेहेसे अंधेर जी।
ते माटे पिउजी करे रे पुकार, तमे आवजो ते आणे सेर जी।। ३३ ।।

महाप्रलय होने तक यह अंधेरा रहेगा। इस वास्ते पियाजी पुकार-पुकार के कहते हैं कि तुम सीधे रास्ते पर आ जाओ।

तारतमनूं अजवालूं लईने, वालो आव्या छे बीजी वार जी।
फोडी ब्रह्मांडने पाडयो मारग, आंही अजवालूं अपार जी।। ३४ ।।

तारतम का उजाला लेकर वालाजी दूसरी बार आए हैं। उन्होंने ब्रह्माण्ड को फोड़कर नया रास्ता बताया है। इसमें उजाला ही उजाला है (दूसरे तन में बैठ जाएंगे)।

पिउजी पधारया तेडवा तमने, तो थाय छे आटलो पुकार जी।
एम करतां जो नहीं मानो, तो वालो नहीं रहे निरधार जी।। ३५ ।।

पियाजी तुम्हें बुलाने आए हैं, तो इतनी पुकार की जा रही है। ऐसा करने पर भी यदि नहीं मानोगे तो वालाजी निश्चित नहीं रहेंगे।

विखम वाट जल मांहें अंधेरी रे, तमने लागसे लेहेर निघात जी।
वलीने वसेके जीव बेसुध थासे, नहीं सांभलो ते घरनी वात जी।। ३६ ।।

इस भवसागर के अंधेरे में भयंकर रास्ता होगा, जिसकी लहरें तुम्हें चोट पहुंचाएंगी। इससे जीव फिर से बेसुध हो जाएगा, इसलिए अच्छा है कि अपने घर की बात सुनो।

मछ गलागल मांहे छे सवला, अने पूरतणा प्रवाह जी।
दिस एके नव सूझे सागर मां, तमे रखे ते विहिला थाओ जी।। ३७ ।।

इस भवसागर में बड़े-बड़े ताकतवर मगरमच्छ हैं तथा सागर की धारा भी तेज है। ऐसे सागर में से निकलने की कोई दिशा दिखाई नहीं पड़ती। इसलिए, हे साथजी! तुम अपने को दुःख से बचाओ।

Nijanand App

तमे उठो ते अंग मरोडीने, म जुओ मायानो मरम जी।
धणी पधारया छे तम माटे, तमने हजी न आवे सरम जी।। ३८ ।।

तुम अंग मरोड़ कर उठो और माया का रस (मर्म-भेद-स्वाद) मत देखो। धनी तुम्हारे वास्ते आए हैं। तुमको अभी तक शर्म नहीं आती?

ए निद्रा तमे केम रे उडाडसो, जिहां नहीं करो कोई पर जी।
ओलखी धणी तमे आप संभारी, जागी जुओ तमे घर जी।। ३९ ।।

इस नींद को तुम कैसे छोड़ोगे? यहां कोई दूसरा होगा ही नहीं। इसलिए धनी की पहचान करके तुम अपने आपको संभालो और जागकर अपना घर देखो।

ए रे अमल तमने केम रे उतरसे, जे जेहेर चढ्यूं अति भारी जी।
जिहां लगे जीवने वाण न लाग्यो, थाक्या ते धणी पुकारी जी।। ४० ।।

तुम्हारा यह नींद का नशा कैसे उतरेगा? इसका तुम्हें बहुत ज्यादा जहर चढ़ गया है। जब तक तुम्हारे जीव को चोट नहीं लगती, तब तक धनी पुकार-पुकार कर थक जाएंगे।

हवे जो जाणो घर पामूं पोतानूं, तो राखजो वैरागनी सेर जी।
सर्वा अंगे सुध सेवा करजो, एम जागसो पोताने घेर जी।। ४१ ।।

यदि तुम अब अपना घर चाहते हो तो वैराग्य का रास्ता पकड़ना (दुनियां से वैर धनी से राग)। सब अंगों से सावचेत होकर धनी की सेवा करना। इस प्रकार से अपने घर में जागोगे।

जो जाणो जीवने जगवुं रे आहीं, तो तां जोजो ते रास प्रकास जी।
एम केहेजो जीवने आ कह्यूं सर्व तूंने, त्यारे जीवने थासे अजवास जी।। ४२ ।।

यदि तुम जानते हो कि जीव को यहीं जगाना है तो तुम रास और प्रकास (प्रकाश) के वचनों को देखना, जीव से कहना कि यह सब तेरे लिए ही कहा है। तब जीव को प्रकाश मिल जाएगा अर्थात् जाग जाएगा।

एणे अजवाले जेहेर उतरसे, त्यारे जीव ते करसे जोर जी।
परआतम ने आतम जोसे, त्यारे टलसे ते तिमर घोर जी।। ४३ ।।

इस उजाले में (रास और प्रकाश के ज्ञान से) जहर उतर जाएगा। जब जीव जोर पकड़ेगा, तब आत्मा परआत्म को देखेगी, तब घोर अन्धकार मिट जाएगा।

एणी पेरे तमे जीव जगवसो, त्यारे थासे ते जोत प्रकास जी।
प्रेमतणा पूर प्रघल आवसे, थासे ते अंधकारनो नास जी।। ४४ ।।

इस तरह से तुम अपने जीव को जगाओगे तब ज्ञान का प्रकाश होगा। प्रेम के पूर के पूर आएंगे तथा अन्धकार का नाश हो जाएगा।

कोमल चित करी वचन रुदे धरी, जोजो ते सर्व संभारी जी।
खरा जीवने वचन कह्या छे, माया जीवने थासे ए भारी जी।। ४५ ।।

अपने कोमल चित्त और हृदय में इन वचनों को धारण करो और इनको देख करके याद करो। यह वचन खरे जीव को कहे हैं। माया के जीव को यह भारी होंगे।

Nijanand App

माया जीव आंही टकी न सके रे, तेणे नहीं लेवाय ए वचन जी।
ए वचन घणुऐ लागसे मीठा, पण रेहेवा न दे खोटानूं मन जी।। ४६ ।।

माया के जीव यहां टिक नहीं सकेंगे और न एक वचन बोल सकेंगे। यह वचन मीठे तो लगेंगे, पर उनका पापी मन इन्हें उनके पास रहने नहीं देगा।

ब्रह्मांड माहेलो जीव जे होय रे, ते तां जाजो पोतानी वाटे जी।
बेहद जीव जे होय रे अमारो, आ वचन कहवाय ते माटे जी।। ४७ ।।

यदि कोई माया का जीव हो तो अपने रास्ते (बैकुण्ठ) जाए। यदि कोई बेहद का हमारा साथी है तो यह वचन उसके लिए कहे हैं।

वासनाने तां जीव न केहेवाय, घणुए दुख मूने लागे जी।
खोटानी संगते खोटूं कहूं छूं, पण सूं करूं मान केमे जागे जी।। ४८ ।।

वासना (आत्मा) को जीव नहीं कहना। मेरे को बड़ा दुःख लगता है। खोटे की संगत से ही हमने (आत्मा को जीव कहा है) खोटा कहा है अर्थात् वासना को जीव कहा है। पर क्या करूं? मेरे सुन्दरसाथ जो अभिमान में हैं (माया में हैं) वह कैसे जागेंगे?

कठण वचन हूं तोज कहूं छूं, नहीं तो केम कहूं वासनाने जीव जी।
रखे दुख देखे वासना ते माटे, ए प्रगट वाणी हूं कही जी।। ४९ ।।

कठिन वचन तो मैं इसीलिए कहती हूं, नहीं तो वासना (आत्मा) को जीव कौन कह सकता है? वासना (आत्मा) इसके लिए दुःख न माने, इसीलिए मैंने इस बात को स्पष्ट (खुलासा) कर दिया है।

प्रकास वाणी तमे जोजो जोपे करी, रखे मूको ते एक वचन जी।
द्रढ थई तमे देजो जीवने, लेजो ते मांहेलूं धन जी।। ५० ।।

प्रकाश वाणी के ज्ञान को तुम अपनी तरह से देखना। एक वचन को भी मत छोड़ना। दृढ़ निश्चय करके यह ज्ञान जीव को देना और इसके अन्दर का धन (ज्ञान) अपने पास रखना।

ए धननो ते लेजो अर्थ, त्यारे प्रगट थासे प्रकास जी।
एणे अजवाले जीव जागसे, त्यारे वृथा न जाए एक स्वास जी।। ५१ ।।

इस वचन रूपी धन का अर्थ निकालो तो तुमको उजाला हो जाएगा। उस उजाले (प्रकाश) से जीव जागेगा। फिर एक सांस भी व्यर्थ नहीं जाएगी।

प्रगट वाणी प्रकास कही छे, इंद्रावती चरणे लागे जी।
ते लाभ लेसे बंने ठामनो, जेहेनो जीव आंहीं जागे जी।। ५२ ।।

यह प्रगट वाणी प्रकाश की ज्ञान के लिए कही है। श्री इन्द्रावतीजी साथ के चरणों में लगकर कहती हैं कि जिसका जीव यहां जाग जाएगा उसको दोनों ठिकानों का सुख मिलेगा (लाभ मिलेगा)।

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ ७९३ ॥

Nijanand App